प्रातः क्लास 15-12-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। ओमशान्ति अक्सर कर के क्यों कहा जाता है। यह है परिचय देना। आत्मा का परिचय आत्मा ही देती है। बात चित आत्मा ही करती है शरीर द्वारा। आत्मा बिगर तो शरीर कुछ कर नहीं सकता। तो यह आत्मा, अपना परिचय देती है हम आत्मा परमपिता परमात्मा के सन्तान हैं। वह तो कह देते अहम्आत्मा सो परमात्मा। तुम बच्चों को यह सभी बातें समझाई जाती है। बाप तो बच्चे2 ही कहेंगे ना। रूहानी बाप कहते हैं हे रूहानी बच्चों। इन आरगन्स द्वारा तुम समझते हो। बाप समझाते हैं पहले2 है ज्ञान। फिर है भक्ति। ऐसे नहीं कि पहले भक्ति पीछे ज्ञान है। पहले ज्ञान दिन, पीछे है भक्तिरात। पहले ज्ञान पीछे अज्ञान। बहुत कर के संयासी लोग यह जानते होंगे ज्ञान दिन फिर भक्ति रात। फिर पीछे कब दिन आवे जब भक्ति का वैराग्य हो। तुम्हारी बुधि मे यह रहना चाहिए ज्ञानऔर विज्ञान है ना। पहले फिर भी ज्ञान कहना पड़े। अभी तुम ज्ञान की पढ़ाई पढ़ रहे हो फिर सतयुग त्रेता मे तुमको ज्ञान की प्रारब्ध मिलती है। ज्ञान बाबा अभी देते हैं जिसकी प्रारब्ध फिर सतयुग त्रेता मे होगी। यह समझने की बातें हैं ना। अभी बाप तुमको ज्ञान दे रहे हैं। तुम जानते हो फिर ज्ञान से परे विज्ञान अपने घर शान्तिधाम मे जावेंगे। उनको न ज्ञान न भक्ति कहेंगे। उसको कहा जाता है विज्ञान। ज्ञान से परे शान्तिधाम चले जाते हैं। यह सभी ज्ञान बुधि मे रखना है। बाप ज्ञान देते हैं। नई दुनिया मे जावेंगे तो पहले अपने घर जरूर जावेंगे। मुक्तिधाम मे जाना है, जहां के रहवासी आत्मायें हैं वहां तो जरूर जावेंगे ना। यह नई2 बातें तुम ही सुनते हो। और कोई समझ नहीं सकते। तुम समझते हो हम आत्मायें स्प्रीचुअल फादर के स्प्रीचुअल बच्चे हैं। रूहानी बच्चों को जरूर रूहानी बाप चाहिए। रूहानी बाप और रूहानी बच्चे। रूहानी बच्चों का रूहानी बाप एक ही है। वह आ कर नालेज देते हैं। बाप कैसे आते हैं वह भी समझाया है। बाप कहते हैं मुझे भी प्रकृति धारण करना पड़े। अभी तुमको बाप से सुनना ही सुनना है। सिवाय के और कोई से नहीं। बच्चे सुनकर फिर और भाईयों को सुनाते हैं। कुछ न कुछ सुनाते जरूर हैं अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। क्योंकि वही पतित-पावन है। बुधि वहां चली जाती है। बच्चों को समझाने से समझ जाते हैं क्योंकि पहले बेसमझ थे। भक्ति-मार्ग मे बेसमझाई से रावण के चम्बे मे आने से क्या2 करते हैं। कैसे छो2 बन जाते हैं। शराब पीने से क्या बन जाते हैं। शराब गन्दगी को और ही बढ़ाती है। अभी तुम बच्चों की बुधि मे है बेहद के बाप से हमको वरसा लेना है, कल्प2 लेते आये हैं। इसलिये दैवी-गुण भी जरूर धारण करनी है। कृष्ण की दैवीगुणों की कितनी महिमा है। बैकुण्ठ का मालिक कितना मीठा है। अब कृष्ण की डिनायस्टी नहीं कहेंगे। अभी तुम बच्चों को मालूम है बाप ही राजाई की डिनायस्टी देते हैं। यह चित्र आदि भल न भी हो तो भी तुम समझा सकते हो। मंदिर तो बहुत बनते रहते हैं। जिन मे ज्ञान है वह औरों का भी कल्याण करने आप समान बनाने भागते रहेंगे। अपन को देखना है हमने कितने को ज्ञान सुनाया है। और कोई2 को झट ज्ञान का तीर लग जाता है। भिष्मपितामह आदि ने भी कहा है ना हमको कुमारियों से ज्ञान बाण लगा। यह सभी पवित्र कुमार-कुमारियां हैं। अर्थात बच्चे हैं। तुम सभी बच्चे हो। इसलिये कहते हो हम ब्रह्मा के बच्चे कुमार-कुमारियां भाई-बहन हैं। यह पवित्र नाता होता है। सो भी एडाप्टेड चिल्ड्रेन्स हैं बाप ने एडाप्ट किया है। शिव बाबा ने एडाप्ट किया है प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा। वास्तव मे एडाप्ट अक्षर भी नहीं कहेंगे। शिव बाबा के बच्चे तो हैं ही। सभी मुझे बुलाते हैं ओ शिव बाबा। परन्तु वह समझ कुछ नहीं है। सभी आत्मायें शरीर धारण कर पार्ट बजाती हैं। तो शिव बाबा भी जरूर शरीरधारण कर पार्ट बजावेंगे ना। शिव बाबा पार्ट न बजावे तो फिर कोई काम का न रहा। वैल्यु ही न होती। उनकी वैल्यु ही तब है जब कि सारी दुनिया की सदगति करते हैं। तब उनकी महिमा होती है। भक्ति मार्ग मे गाते हैं। सदगति हो जाती है फिर पीछे तो बाप को याद करने की दरकार ही नहीं। वह सिर्फ गाड-फादर कहते हैं तो फिर टीचर गुरु गुम हो जाता। कहने मात्र रह जाता है कि परमपिता परमात्मा पावन बनने वाला है। वह सदगति करने वाला भी नहीं कह सकते। भल गायन मे आता है सर्व की सदगति दाता एक। —

परन्तु अर्थ बिगर कह देते हैं। अभी तुम जो कुछ कहते हो सो अर्थ सहित। समझते हो भक्ति रात अलग है, ज्ञान दिन अलग है। अभी दिन का भी टाईम होता है, रात का भी टाईप होता है। यह बेहद की बात है। तुम बच्चों को नालेज मिलती है बेहद की। आधा कल्प है दिन, आधा कल्प है रात। बाप कहते हैं मैं भी आता हूं रात को दिन बनाने। बेहद का बाप कहते हैं मैं आता हूं बेहद की रात में। आधा कल्प दिन पूरा हुआ। दिन और रात के बीच में आता हूं। तुम जानते हो आधा कल्प है रावण का राज्य। उसमें अनेक प्रकार के दुःख हैं। फिर बाप नई दुनिया स्थापन करते हैं तो उसमें सुख ही सुख मिलता है। कहा जाता है यह सुख और दुःख का खेल है। सुख माना राम, दुःख माना रावण। रावण पर जीत पाते हो तो रामराज्य होता है। फिर आधा कल्प बादरावण राम-राज्य पर जीत पाती है तो खुद रावण बैठ राज्य करता है। तुम अभी माया पर जीत पाते हो। अक्षर व अक्षर तुम अर्थ सहित कहते हो। यह है तुम्हारी ईश्वरीय भाषा। यह कोई समझेगा थोड़ेही ईश्वर कैसे बात करते हैं। तुम जानते हो यह गाड फादर की भाषा है। क्योंकि गाड फादर नालेज-फुल है। गाया भी जाता है वह ज्ञान का सागर नालेज-फुल है। तो जरूर किसको तो नालेज देंगे ना। अभी तुम समझते हो कैसे बाबा नालेज देते हैं। अपनी भी पहचान देते हैं और सृष्टि-चक्र का भी नालेज देते हैं जो नालेज लेने से हम चक्रवर्ती राजा बनते हैं। स्वदर्शनचक्र है ना। याद करने से हमारे पाप कट जाते हैं। यह है तुम्हारा अहिंसक चक्र याद का। वह चक्र है हिंसक। सिर काटने का। वह अज्ञानी मनुष्य एक दो का सिर काटते रहते हैं। तुम इस स्वदर्शनचक्र को जानने से बादशाही पाते हो। वह गला काटते हैं। वह है हिंसा का चक्र जिससे गला कटता है। काम महाशत्रु है जिससे आदि मध्य अन्त दुःख मिलता है। वह है दुःख का चक्र। तुमको बाप बैठ यह चक्र का नालेज समझाते हैं। स्वदर्शनचक्रधारी बना देते हैं। शास्त्रों में तो कितनी कथाएं आदि बनादी हैं। ढेर के ढेर कथाएं हैं। तुमको अभी वह सभी भूलना पड़ता है। सिर्फ एक बाप को याद करना है। क्योंकि बाप से ही स्वर्ग का वरसा लेंगे ना। बाप को याद करना है और वरसा लेना है। कितना सहज है। बेहद का बाप नई दुनिया स्थापन करते हैं तो वरसा लेने लिये ही याद करते हो। बाप ही दैवी स्वराज्य अथवा स्वर्ग स्थापन करते हैं। तो बाप को और वरसे को याद करना है। मन्मनाभव, मध्याजीभव। बाप और वरसे को याद करते क्यों नहीं बच्चों को खुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिए। हम बेहद के बाप के बच्चे हैं। हम स्वर्ग के मालिक थे। भारतवासियों की ही बात है। तुम कहते हो हम बेहद के बाप के बच्चे हैं। बाप स्वर्ग की स्थापना करते हैं, हम स्वर्ग के मालिक थे, फिर जरूर हमको ही मालिक होना चाहिए। हम आत्माएं बाप के बच्चे हैं, बाप स्वर्ग स्थापन करते हैं तो हमें भी जरूर स्वर्ग के मालिक होने चाहिए। बाप से वरसा पाने वाले स्वर्गवासी जरूर होते हैं। फिर तुम ही नर्कवासी हुये हो। स्वर्गवासी भी तुम्हीं बनते हो। जो सतोप्रधान बनते हैं वही फिर तमोप्रधान भी जरूर बनते हैं। सतोप्रधान थे अभी तमोप्रधान हैं। भक्ति मार्ग में भी हम ही आये हैं, आलराउन्ड चक्र लगाया है। हम ही भारतवासी स्वर्गवासी थे अर्थात सूर्यवंशी थे फिर चन्द्रवंशी, वैश्य वंशी .... बन नीचे गिरे हैं। हमारा कुल था। हम भारतवासी देवी-देवताएं थे। फिर हम ही गिरे हैं। तुमको सारा अभी मालूम पड़ता है वाममार्ग में जाते हैं तो कितना छी2 बन जाते हैं। मंदिर में भी ऐसे2 चित्र छी छी बनाये हुये हैं। आगे घड़ियां भी ऐसे गन्दे चित्रों वाले बनाते थे। अभी तुम समझते हो हम कितने गुल2 थे फिर हम ही पुनर्जन्म लेते2 कितने छीछी बनते हैं। यह सतयुग के मालिक थे, तो दैवी गुणों वाले मनुष्य थे। अभी आसुरी गुणों वाले बनते हैं। और कोई फर्क नहीं है। पूंछ वाला वा सूंड सूंड वाला मनुष्य होता नहीं है। देवताओं की सिर्फ यह निशानियां हैं। बाकी तो स्वर्ग प्रायः लोप हो गया है। यह चित्र ही निशानी है। चन्द्रवंशियों की भी निशानी है। अभी तो माया पर जीत पाने युध करते हो। युध करते करते फेल हो जाते हैं तो उनको यह निशानी दे दी है। भारतवासी ही वास्तव में देवी देवता घराने के। नहीं तो सभी घराने के गिने जाये। परन्तु भारतवासियों को अपने घराने का मालूम न होने

१५-१२-५२

कारण हिन्दु कह देते हैं। नहीं तो वास्तव में तुम्हारा है ही एक घराणा। भारत में सभी हैं देवताएं घराणे के। जो बेहद का बाप ही स्थापन करते हैं। शास्त्र भी भारत का एक ही है। अवास्तव में सभी देवताएं हैं। डिटी डिनायस्टी की स्थापना होती है फिर उनमें भिन्न2 बान्चेज हो जाती हैं। बाप स्थापन करते हैं देवी देवता धर्म की। मुख्य है चार धर्म। फाउन्डेशन तो देवी देवताधर्म का ही है। रहने वाले भी मुक्तिधाम के हैं। फिर तुम अपने देवी देवता के ब्रान्चेज में चले जावेंगे। भारत की बाउन्ड्री एक ही है। और कोई धर्म की नहीं हैं। यह है असल देवी देवता धर्म की। फिर उन से और2 धर्म निकले हैं। ड्रामा के प्लेन अनुसार। भारत का असल धर्म है ही डिटी। जो स्थापन करने वाला बाप ही है। फिर नये2 पत्ते निकलते रहते हैं। यह सारा ईश्वरीय झाड़ है। बाप कहते हैं मैं इस झाड़ का बीज रूप हूं। यह फाउन्टेन है। फिर उनसे तीन दयुब्स निकलते हैं। मुख्य बात है सभी आत्मा एं भाई2 हैं। सभी आत्माओं का एक बाप है। सभी उनको याद करते हैं। अभी बाप कहते हैं इन आंखों से तुम जो कुछ देखते हो उनको भूल जाना है। यह है बेहद का वैराग्य। उनका है हद का। सिर्फ घर-बार से वैराग्य आ जाता है। तुमको तो इस सारी दुनिया से वैराग्य है। भक्ति के बाद है वैराग्य पुरानी दुनिया का। फिर हम नई दुनिया में जावेंगे बाया शान्तिधाम। बाकी कहते हैं यह पुरानी दुनिया भस्म हो जानी है। इस पुरानी दुनिया से अभी दिल नहीं लगानी है। रहने का तो यहां ही है जब तक लायक बन जावें। हिसाब किताब सभी चुकुत करना है। तुम आधा कल्प लिये सुख जमा करते हो। उनका नाम ही है शान्तिधाम। सुखधाम। पहले सुख होता है। पीछे दुःख। बाप ने समझाया है जो भी नई आत्माएं आती हैं ऊपर से, जैसे क्राईस्ट में आत्मा आई उनको पहले दुःख नहीं देखना है। खेल ही है पहले सुख, पीछे दुःख। नये2 जो आते हैं वह हैं सतोप्रधान। जैसे तुम्हारा सुख का अन्दाज जास्ती है वैसे सभी के सुखों का अन्दाज जास्ती न है। यह सभी बुधि से काम लिया जाता है। बाप आत्माओं को बैठ समझाते हैं। बाप कहते हैं मैं ने यह शरीर धारण किया है। बहुत जन्मों के अन्त में अर्थात तमोप्रधान में मैं प्रवेश करता हूं। फिर उनको ही फर्स्ट नम्बर में जाना है। फर्स्ट सो लास्ट। लास्ट सो ~~फास्ट~~ फास्ट। यह भी समझाना पड़ता है ना। फर्स्ट के पीछे फिर कौन? मम्मा। उनका पढ़ना चाहिए। उन्होंने बहुतों को शिक्षा दी। फिर तुम बच्चों में नम्बरवार हैं जो बहुतों को शिक्षा देते हैं पढ़ाते हैं। फिर पढ़ने वाले भी ऐसे कोशिश करते हैं जो तुम से भी ऊंच चले जाते हैं। बहुत सेन्टर्स पर ऐसे होते हैं। जो पढ़ाने वाले टीचर्स से ऊंच चले जाते हैं। गेलप कर अच्छे2 बड़े2 सेन्टर्स पर चले जाते हैं। एक एक को देखा जाता है। सभी के चलन से मालूम तो पड़ता है ना। कोई कोई को तो माया ऐसा नाक से पकड़ती है जो एकदम खलास कर देती है। विकार में गिर पड़ते हैं। आगे चलकर तुम बहुतों का सुनते रहेंगे। कोई तो फिर अपने पति के साथ ही ऐसे मिल जाते हैं जो आगे से भी जास्ती। वन्डर खावेंगे यह तो हमको ज्ञान देते थे फिर यह कैसे चले गये। हमको कहते थे पवित्र बनो और खुद फिर छी छी बन गये। समझेंगे तो जरूर ना। बहुत छी छी बन जाते हैं। कब समझने वाले भी नहीं। न बाप याद आवेगा न ज्ञान याद आवेगा। बाबा ने कहा है बड़े बड़े अच्छे2 महारथियों को माया बहुत जोर से पटकारेगी। आखरीन जीत पा ही लेंगी। जैसे तुम माया को फटकार फटकार जीत पाते हो ना। माया भी ऐसे ही करेगी। कितने अच्छे2 ~~फर्स्ट~~ फर्स्ट क्लास थे। नाम भी बाप ने कितने रत्नाकर रखे थे। परन्तु अहो माया ..... आश्चर्यवत सुनन्ति, कथन्ति, भागन्ती गिरन्ति हो गये। माया कितनी जबरदस्त है। इसलिये बच्चों को बहुत ही खबरदार रहना चाहिए। कोई के संग में न आना चाहिए। युध का मैदान है ना। माया के साथ तुम्हारी कितनी बड़ी युध है।

अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुड मार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।